संक्षेपण (PRECIS) ①

संक्षेपण की परिभाषा :

किसी विस्तृत विवरण, सविस्तार व्याख्या, वक्तव्य, पत्रव्यवहार या लेखन के तथ्यों और निर्देशों के ऐसे संयोजन को 'संक्षेपण' कहते हैं, जिसमें अप्रासांगिक, असंबद्ध, पुनरावृत, अनावश्यक बातों का त्याग और सभी अनिवार्य, उपयोगी तथा मूल तथ्यों का प्रवाहपूर्ण संक्षिप्त संकलन हो।

इस परिभाषा के अनुसार, संक्षेपण एक स्वतः पूर्ण रचना है। उसे पढ़ लेने के बाद मूल संदर्भ को पढ़ने की कोई आवश्यकता नहीं रह जाती। सामान्यतः संक्षेपण में लंबे-चौड़े विवरण, पत्राचार आदि की सारी बातों को अत्यन्त संक्षिप्त और क्रम-बद्ध रूप में रखा जाता है। इसे हम कम से कम शब्दों में अधिक-से-अधिक विचारों, भावों और तथ्यों को प्रस्तुत करते हैं। संक्षेपण पल्लवन का विलोम है। संक्षेपण में अनावश्यक बातें छाँटकर निकाल दी जाती हैं और मूल बातें रख ली जाती हैं। यह काम सरल नहीं। इसके लिए निरंतर अभ्यास की आवश्यकता है।

संक्षेपण के गुण :

१ **पूर्णता** : संक्षेपण स्वतः पूर्ण होना चाहिए। संक्षेपण करते समय इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि उसमें कहीं कोई महत्वपूर्ण बात छूट तो नहीं गई। आवश्यक और अनावश्यक अंशों का चुनाव खूब सोच-समझकर करना चाहिए। यह अभ्यास से ही संभव है। संक्षेपण में उतनी ही बातें लिखी जाएँ, जो मूल अवतरण या संदर्भ में हो, न तो अपनी ओर से कहीं बढ़ाई जाए और न घटाई जाए तथा न मुख्य बात कम की जाए। मूल में जिस विषय या विचार पर जितना जोर दिया गया है, उसे उसी अनुपात में, संक्षिप्त रूप से लिखा जाना चाहिए। ऐसा न हो तो कुछ विस्तार में लिख दिया जाए और कुछ कम।

Scanned with CamScanner

संक्षेपण व्याख्या, आशय, भावार्थ, सारांश इत्यादि से बिल्कुल भिन्न है।

2. **संक्षिप्तता :** संक्षिप्तता संक्षेपण का एक प्रधान गुण है। यद्यपि इसके आकार का निर्धारण और नियमन संभव नहीं है, तथापि संक्षेपण को सामान्यतया मूल का तृतीयांश होना चाहिए। इसमें व्यर्थ विश्लेषण दृष्टांत, उद्धरण, व्याख्या और वर्णन नहीं होने चाहिए। लंबे-लंबे शब्दों और वाक्यों के स्थान पर सामासिक चिन्ह लगाकर उन्हें छोटा बनाना चाहिए। यदि शब्द संख्या निर्धारित हो, तो संक्षेपण उसी सीमा में होना चाहिए। किंतु इस बात का अवश्य ध्यान रखना चाहिए कि मूल की कोई भी आवश्यक बात छुटने न पाए।

3. **स्पष्टता :** संक्षेपण की अर्थव्यंजना स्पष्ट होनी चाहिए। मूल अवतरण का संक्षेपण ऐसा लिखा जाए, जिसके पढ़ने से मूल संदर्भ का अर्थ, पूर्णता और सरलता से स्पष्ट हो जाए। ऐसा न हो कि संक्षेपण का अर्थ स्पष्ट करने के लिए मूल संदर्भ को ही पढ़ना पड़े। इसलिए, स्पष्टता के लिए पूरी सावधानी की जरूरत होती है। संक्षेपक (PRECIS WRITER) को यह बात याद रखने योग्य है कि संक्षेपण के पाठक के सामने मूल संदर्भ नहीं रहता। इसलिए उसमें (संक्षेपण में) जो कुछ लिखा जाए, वह बिल्कुल स्पष्ट हो।

4. **भाषा की सरलता :** संक्षेपण के लिए यह बहुत जरूरी है कि उसकी भाषा सरल और परिष्कृत हो। क्लिष्ट और समासबहुल भाषा का प्रयोग नहीं होना चाहिए। भाषा को किसी भी हालत में अलंकृत नहीं होना चाहिए। जो कुछ लिखा जाए, वह साफ-साफ हो, उसमें किसी तरह का चमत्कार या घुमाव-फिराव लाने की कोशिश न की जाए। इसीलिए संक्षेपण की भाषा सुस्पष्ट और आडंबरहीन होनी चाहिए। तभी उसमें सरलता आ सकेगी।

Scanned with CamScanner

5. शुद्धता :- संक्षेपण में भाव और भाषा की शुद्धता होनी चाहिए। शुद्धता से हमारा मतलब यह है कि संक्षेपण में वे ही तथ्य तथा विषय लिखे जाएँ, जो मूल संदर्भ में हो। कोई भी बात अशुद्ध, अस्पष्ट या ऐसी न हो, जिसके अलग-अलग अर्थ लगाए जा सकें। इसमें मूल के आशय को विकृत या परिवर्तित करने का अधिकार नहीं होता और न अपनी ओर से किसी तरह की टीका-टिप्पणी होनी चाहिए। भाषा व्याकरणोचित होनी चाहिए। टेलिग्राफीक नहीं।

6. प्रवाह और क्रमबद्धता :- संक्षेपण में भाव और भाषा का प्रवाह एक आवश्यक गुण है। भाव क्रमबद्ध हो और भाषा प्रवाहपूर्ण। क्रम और प्रवाह के संतुलन से ही संक्षेपण का स्वरूप निखरता है। वाक्य सुसंबद्ध और गठित हों। प्रवाह बनाये रखने के लिए वाक्य रचना में जहाँ-तहाँ 'अतः', 'अतएव', तथापि जैसे शब्दों का प्रयोग किया जा सकता है। एक भाव दुसरे भाव से संबद्ध हो। उनमें तार्किक क्रमबद्धता (Logical sequence) रहनी चाहिए। सारांश यह है कि संक्षेपण में तीनों गुणों का होना बहुत जरूरी है - (i) संक्षिप्तता (Brevity) (ii) स्पष्टता (clearness) और (iii) क्रमबद्धता (coherence)।

संक्षेपण के नियम

(i) मूल संदर्भ को ध्यानपूर्वक पढ़ना चाहिए। जब तक उसका संपूर्ण भावार्थ (substance) स्पष्ट न हो जाए, तब तक संक्षेपण लिखना आरंभ नहीं करना चाहिए। इसके लिए यह आवश्यक है कि मूल अवतरण कम-से-कम तीन बार अवश्य ही पढ़ना चाहिए।

(ii) मूल के भावार्थ को समझ लेने के बाद आवश्यक शब्दों, वाक्यों अथवा वाक्यखंडो को रेखांकित करें, जिसका मूल विषय से सीधा संबंध हो अथवा जिनका भावों या विचारों की अन्विति में विशेष महत्व हो। इस प्रकार कोई भी तथ्य छूटने न पाये, यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

(iii) संक्षेपण मूल संदर्भ का संक्षिप्त रूप है, इसलिए इस बात का ध्यान रखना आवश्यक है कि इसमें अपनी ओर से किसी तरह का टीका टिप्पणी अथवा आलोचना प्रत्यालोचना न हो। संक्षेपण में लेखक को किसी मतवाद के खंडन का अधिकार है और न अपनी ओर से मौलिक या स्वतंत्र विचारों को जोड़ने की छूट है। उसे तो मूल के भावों अथवा विचारों के अधिन रहना है, और उन्हे ही संक्षेप में लिखना है।

(iv) संक्षेपण को अंतिम रूप देने के पहले रेखांकित वाक्यों के आधार पर उसकी रूपरेखा तैयार करनी चाहिए, फिर उसमें उचित और आवश्यक संशोधन (जोड़-घटाव) करना चाहिए। यहाँ एक बात ध्यान रखने की यह है कि मूल संदर्भ के विचारों की क्रमबद्धता में आवश्यक परिवर्तन किया जा सकता है। यह कोई आवश्यक नहीं है कि जिस क्रम में मूल लिखा गया है, उसी क्रम में संक्षेपण भी लिखा जाए। लेकिन, यह अत्यन्त आवश्यक है कि उसमें विचारों का तारतम्य बना रहे। ऐसा मालूम हो कि एक वाक्य का दुसरे से सीधा संबंध बना हुआ है।

(v) उक्त रूपरेखा को अंतिम रूप देने के पहले उसे एक दो बार ध्यान से पढना चाहिए, ताकि कोई भी आवश्यक विचार छुटने न पाए। जहाँ तक हो सके, वह अत्यन्त संक्षिप्त हो। यदि शब्दसंख्या पहले से निर्धारित हो तो यह प्रयत्न करना चाहिए कि संक्षेपण में उस निर्देश का पालन किया जाए। सामान्यतया उसे मूल संदर्भ का एक तिहाई होना चाहिए।

(vi) अंत में, संक्षेपण को व्याकरण के सामान्य नियम के अनुसार एक क्रम में लिखना चाहिए।

(vii) उपर्युक्त सारी क्रियाओं के बाद संक्षेपण के भावों और विचारों के अनुकूल एक संक्षिप्त शीर्षक देना चाहिए शीर्षक ऐसा हो, जो सभी तथ्यों को समेटने की क्षमता रखे। शीर्षक लघु और कम-से-कम शब्दों वाला होना चाहिए।

Scanned with CamScanner

निष्कर्ष :- सारांश यह है कि संक्षेपण की लेखनविधि अन्वय, सारांश, भावार्थ, आशय, मुख्यार्थ, आलेख (रूपरेखा) इत्यादि से बिलकुल भिन्न है। जिस संदर्भ का संक्षेपण लिखना हो, उसे सावधानी से पढ़ लिया जाए और उसके भावार्थ तथा विषय को अच्छी तरह समझने की चेष्टा की जाए। संभव है कि एक बार पढ़ने से कुछ भाव स्पष्ट न हो। अतः उसे दुबारा-तिबारा पढ़ने की चेष्टा करनी चाहिए। महत्वपूर्ण अंशों को रेखांकित किया जाए। अब इन महत्वपूर्ण अंशों के आधार पर एक संक्षिप्त प्रारूप तैयार किया जाए। इसे सामान्यतया मूल संदर्भ की एक तिहाई के बराबर होना चाहिए। यदि कहीं कुछ अस्पष्टता रह जाए, तो फिर तीसरी बार इस दृष्टि से मूल प्रारूप को पढ़ा जाए कि कहीं भूल से कोई आवश्यक बात छूट तो नहीं गई है। अंतिम रूप से जब संक्षेपण तैयार हो जाए, तब उसका एक उपयुक्त, किंतु छोटा-सा शीर्षक भी दे दिया जाए। अंत में, समस्त संक्षेपण को एक दृष्टि से ध्यानपूर्वक पढ़ लिया जाए कि भाषा प्रवाह कहीं विच्छिन्न तो नहीं हुआ या क्रम तो भंग नहीं हुआ। यदि कहीं भाषा शिथिल हो गई हो या कोई शब्द उपयुक्त नहीं जँचता हो, तो उसमें सुधार कर दिया जाए।

संक्षेपण का [redacted] उदाहरण

तेनसिंह के साहस देखकर उनके फ्रांसीसी साहब चकित रह गए। अंत तक वे बहुत थक गए। यहाँ तक कि उनके पैर की दो अँगुलियाँ मामूली ढंग से जम गई थी। कहा जाता है कि उनकी वीरता देखकर भावुक फ्रेंच साहब इतने जोश में आए कि वे तेनसिंह को हार पहनाना चाहते थे; पर वहाँ पुष्प नहीं थे, इसलिए खाने के लिए जो सासेज (समोसे) रखे थे, उनकी माला पहना दी। उक्त अभियान में दो साहब मारे गए, पर उसी साल जाड़े में जिस अभियान में तेनसिंह ने भाग लिया, वे उसमें स्वयं मृत्यु के जबड़ों में जाकर लौट आए। वे कब्र के दक्षिण में जाने फ्रेडे के साथ कोकतंग शिखर पर चढ़ रहे थे, जो 18800 फुट

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

ऊँचा है। 1851 के 21 अक्तूबर को जॉर्ज फ्रेई के साथ जहाँ से वे जा रहे थे, वह बहुत ढालवाली जगह थी। कुछ बर्फ जमी थी, पर बहुत पतली, ऊपर एक और पहाड़ी थी, जिसपर ढलान और अधिक थी। फ्रेई आगे-आगे थे। तेनसिंह दस कदम पीछे थे। और, एक दूसरा शेरपा औंदुवा उनसे भी दस कदम पीछे था। एका-एक फ्रेई का पैर फिसला और वे तेनसिंह की ओर चले। तेनसिंह ने उन्हें बचाने की चेष्टा की, पर स्वयं उनके पैर लड़खड़ा गए।

[शब्द- 200]

संक्षेपण

शीर्षक:- तेनसिंह का साहस

तेनसिंह के साहस और बीरता पर मुग्ध होकर फ्रांसीसी साहब जॉर्ज फ्रेई ने भावावेश में उनके गले में सोने की माला पहना दी। 28 अक्टूबर 1851 को जबकि तेनसिंह फ्रेई साहब और शेरपा औंदुवा के साथ 18800 फुट ऊँचे पहाड़ कोक्तंग के शिखर पर चढ़ते जा रहे थे, बर्फीले ढलान पर फ्रेई का पैर अचानक फिसला। तेनसिंह ने उन्हें बचाने की कोशिश की, पर वे स्वयं लड़खड़ा गए।

[शब्द = 67]

Scanned with CamScanner